**रविवार, दिनाँक 13-10-2024 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण**

**साजन अखियों में बस जाओ, तूं ही तूं ही नज़र आये**

**तूं ही तूं ही नज़र आये, बस तूं ही नज़र आये**

**साजन अखियों में बस जाओ, तूं ही तूं ही नज़र आये**

**मेरी मैं ही मुक जाये, साजन सोहणा रह जाये**

**साजन अखियों में बस जाओ, तूं ही तूं ही नज़र आये.......**

यह सबसे उत्तम अवस्था है। यदि ख़्याल व दृष्टि में साजन के अनुभव का शुभारम्भ हो जाये तो स्वयंमेव परमात्मा की सर्व-व्यापकता का भान हो जाता है। परिणामतः मन में सजन भाव का उद्‌भव हो जाता है। फिर इन्सान समभाव-समदृष्टि की युक्ति के अनुसार मन-वचन-कर्म से जो भी करता है वह निष्काम-भाव से सुकर्म ही करता है। यह होता है, निर्विकारितापूर्वक जीवन-यापन करना तथा हर क्षण यथार्थ स्वरूप में मानसिक रूप से स्थित रहना और ऐक्यभाव से जगत में विचरना। अतः ऐक्यभाव अपनाकर ऐसे बनो, हाँ ऐसे बनो और ऐसे बनकर अपने ऊपर उपकार करो।

**फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं इक तूं इक तू।**

**फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं।।**

**शेष में तूं है गणेश में तूं है, देवी देवतियां विच तूं इक तूं इक तूं।**

**फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं।।**

**शिव में तूं है ब्रह्मा में तूं है, जिधर देखां सोहणा तूं इक तूं इक तूं।**

**फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं।।**

**सूरज में तूं है चांद में तूं है, तारों में नज़र आवें तूं इक तूं इक तूं।**

**फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं।।**

**वैश्य में तूं है शूद्र में तूं है, क्षत्री ब्राह्मण विच तूं इक तूं इक तूं।**

**फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं।।**

**सीता वी तूं है, महाबीर जी वी तूं है, चवंर झुलेंदा लक्ष्मण तूं इक तूं इक तूं।**

**फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं।।**

**पर्वतों में तूं है दरख़तों में तूं है, फुलवाड़ी में नज़र आवें तूं इक तूं इक तूं।**

**फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं।।**

**इन्द्र में तूं है वरुण में तूं है, कुबेर वी नज़र आवें तूं इक तूं इक तूं।**

**फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आंवें सोहणा तूं।।**

**मोर मुकट मत्थे तिलक विराजे, गल बैजन्ती माला साजे सिंहासन ते सोहणा लगे तूं इक तूं इक तूं।**

**फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं।।**

**मस्ताने ने दासियां नूं मस्ती दिखाई मस्ताना बनाया तूं इक तूं इक तूं।**

**फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं।।**

**जीव जन्तु तेरे दासी ने देखे, चारे पासे नज़र आवें तूं इक तूं इक तूं।**

**फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं।।**

सजनों जब सच्चेपातशाह जी को सर्गुण-निर्गुण के खेल की समता का अन्तर समझ में आ गया तो वह कुल सृष्टि को इस सत्य से परिचित कराने हेतु कह उठे कि हम जिधर भी, जिस वस्तु को भी देखते हैं, उसमें आप ही आप नज़र आते हो, यही सृष्टि का सत्य है। इस संदर्भ में सजनों जानो कि सृजनकर्त्ता जब सर्गुण रूप धारण करते हैं तो वह आप ही

हर वस्तु में वह प्रकाश रूप में समा जाते हैं। इस तरह प्रकाश की तपोबल शक्ति से हर वस्तु चलती-फिरती व बढ़ती हुई अपने वास्तविक गुण को धारण कर गुणवती हो जाती है। परन्तु फिर जब मानव की अज्ञानमय बुद्धि बीच में आ जाती है तब वह अपनी दुर्मति द्वारा यथार्थता को नकारात्मकता में बदलने के प्रति संलग्न हो जाती है। निःसंदेह यह सब इंसान अपना नाम कमाने के लिये करता हैं। सजनों जानो कि व्यक्तिगत यश कमाना यथार्थता से दूर होने की बात होती है। ऐसा न हो इसलिए तो सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि

**फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं।।**

सजनों यह अवस्था निःसन्देह समदृष्टि होने की है। जिस सजन में समदर्शिता का गुण होता है, वही ऐसा अनुभव कर सकता है और जगत के सत्य को जान एकरूपता में स्थित बना रह सकता है। सजनों हमें इस सत्य को मानना है कि ईश्वर सर्वव्यापक है। इस हेतु मानो कि जो हम सब बैठे हुए हैं या जो संसार दिखायी पड़ता है, यह ईश्वर के विराट दर्शन के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। अतः विराटता से सत्य पर पकड़ रखते हुए सूक्ष्मता की ओर बढ़ना है। तदुपरान्त सूक्ष्म के अन्दर प्रवेश कर विश्राम को पा जाना है। यही एक सुगम तरीका है सच्चे घर पहुँचने का। अतः मन में यह सत्य ठहराओ कि संसार में सभी समरूप हैं, अतः  प्रत्येक से समता का व्यवहार करना मेरा कर्त्तव्य है। किसी प्रकार का भी किसी से कोई भिन्न-भेद न होवे और न ही कोई अपने-पराए का भाव होवे। अगर हम इस व्यवहार में परिपक्व हो जाते हैं तो यकीन मानो कि नकारात्मकता द्वारा उत्पन्न सभी झंझट समाप्त हो जाते हैं और हम सकारात्मक विचार धारण करने के योग्य बन जाते हैं। फिर सकारात्मक विचार धारण करने के प्रति हमारे अन्दर स्थित इच्छा-शक्ति प्रबल हो जाती है। जब इच्छा-शक्ति प्रबल हो गई तो सजन, जहाँ से सार्थक विचारों की वर्षा होती है, अपने ख़्याल/ध्यान को वहाँ जोड़कर 'ओ३म्' सार्थक शब्द की रटन लगाता है। वही रटन श्वास-पर-श्वास चलती रहती है।

यहाँ आप यह तो मानते ही हो कि श्वास रुक जाये तो परेशानी होती है और मन में इच्छा होती है कि श्वास चलते रहें ताकि मैं जीवित रहूँ। इसी तरह से इच्छा-शक्ति प्रबल होनी चाहिये कि मेरा अक्षर निरन्तर चलता रहे ताकि मैं केवल शरीर रूप से ही जीवित न रहूँ अपितु मैं अपनी अमरता का अनुभव कर मोक्ष को प्राप्त कर लूँ। उदाहरणार्थ यदि दुःख पहुँचाने के प्रयोजन से कोई आपके मुख पर कुछ दे मारता है तो निश्चित रूप से आप तड़फ उठोगे। उससे बचने के लिये अनथक प्रयास करते हुए अपनी बुद्धि अनुसार युक्तियाँ

लगाओगे कि कहीं चोट न खा जाऊँ, मर न जाऊँ। इस सन्दर्भ में सजनों जानो कि आपको अन्दरुनी वृत्ति में भी ऐसी ही बचाव की युक्तियाँ अपनाने की नितान्त आवश्यकता है। आपके मन में उठने वाले फुरने अक्षर की रटन लगाने में निरन्तर अवरोध उत्पन्न करते हैं अतः फुरनों से आज़ाद होने के लिये आत्मिकबल का प्रयोग तो करना ही होगा। याद रखो हम शारीरिक शक्ति द्वारा उन फुरनों से स्वतन्त्र नहीं हो सकते अपितु आत्मिक-शक्ति के प्रयोग से हर फुरने से निजात पायी जा सकती है। इस तरह ताकतवर होकर हर क्षण आप अपने ख़्याल को अजपा में साध सकते हो। सजनों एक बार अक्षर अजपा चल पड़ा तो वह स्वभाव के अन्तर्गत होकर आपके मन-मन्दिर को इस प्रकार प्रकाशित कर देगा कि आपके लिये आत्मदर्शन का अनुभव करना सहज हो जायेगा। इस प्रकार बाहर के सभी मन्दिर छूट जायेंगे। बाहर के मन्दिरों में तो फुरना/इच्छाएँ लेकर जाते हैं पर यह तो निष्कामता का खेल है। निष्कामता के खेल को खेलने में हम सब पारंगत बन फुरनों से रहित बने रहें, उस हेतु सर्वप्रथम सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे से मिली हुई युक्ति का वर्त-वर्ताव करना ही पड़ेगा। उन युक्तियों के प्रति लापरवाह होकर सफलता असम्भव है। इसका आपको एहसास भी हो रहा होगा कि आप क्योंकर हारे बैठे हो जबकि विजय तो आपके हाथ में है। अतः नकारात्मकता से, अज्ञानमय अवस्था से उबरने के लिये थोड़ा सा प्रयास कर सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित विचारों यानि सार्थक शब्दों को धारण तो करना ही पड़ेगा। केवल धारण ही नहीं अपितु उनके शास्त्र वर्णित रूप को भी यथा अपनाना पड़ेगा। यही होगा, अन्दरुनी वृत्ति में दुराचारी से सदाचारी बनने के निमित्त वास्तविक रूप में परिवर्तन। अब आगे तो अपनी किस्मत का निर्माण अपने खुद के हाथ में होता है। भलाई तो इसी में ही निहित है कि स्वयं पराक्रम दिखाकर परिवारजनों को भी वैसी ही सुमति में लाने का प्रयास करो अन्यथा खुद तो भवसागर में डुबोगे ही, उन सबको भी ले डूबोगे। अपने साथ ऐसा मत करो।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों मानो कि जो भी अलग-अलग नज़र आता है, जैसा कि इस भजन में वर्णन हुआ - 'इन्द्र में तूं है, कुबेर में तूं है', अब यह जो इन्द्र, कुबेर यानि जो भी भिन्न-भिन्न सम्बोधन हैं, यह सृष्टि को चलायमान रखने की केवल व्यवस्था मात्र है। हमें इसका भेद समझना है क्योंकि यदि व्यवस्था ही आपस में उलझ गई तो परिणाम क्या निकलेगा। आज इसी वजह से सृष्टि की दुर्दशा हुई पड़ी है, हर स्थान पर व्यवस्था ही बिगड़ी पड़ी है चाहे वह व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक या फिर देश की ही क्यों न हो। आज की

व्यवस्था में एकता के भाव का अभाव है। तो जानो कि अनेकता का भाव अहंकारजनित होता है। आपने रावण दहन देखा, अहंकारता का भाव ही रावण का प्रतीक है। जब तक उसका दहन नहीं कर लेते, तब तक आपके अन्तर्घट में शान्ति स्थापित नहीं हो सकती, अन्तर्घट में यथार्थ प्रगट नहीं हो सकता। सच्चेपातशाह जी इस निम्न-अवस्था को प्राप्त हुए सजनों के लिए कहते हैं कि हे मानव ! मानव चोला धारकर, विवेकशक्ति होते हुए भी क्यों नालायकी कर्म कमाया और इतनी बार सत्संग में आने के बावजूद भी होश नहीं आया और स्वार्थपरता के रास्ते पर चल पड़े। सजनों अब जो आध्यात्मिक क्रान्ति चल रही है उस सन्दर्भ में आपको बैहरुनी वृत्ति में परिवर्तन लाकर निरर्थकता के स्थान पर सार्थकता अपनाने की आवश्यकता है। अतः आध्यात्मिक क्रान्ति का हिस्सा बनो व सबको संग लेकर चलो अन्यथा परिवारों से, समाज से बिछुड़ जाओगे, पिछड़ जाओगे और बिखर जाओगे यानि कमजोर पड़कर हार खा जाओगे। उस अवस्था में आपको परेशान कर कोई भी आपका नाजायज लाभ उठा सकता है। कैसी विडम्बना है कहाँ तो प्रसन्नता व प्रगति का प्रतीक मानव चोला पाकर जीवन उद्धार करना था और और कहाँ रोना-झुखना पकड़ नीच प्रवृत्ति में चले गए। ऐसे में संसार के बड़े-बड़े पदों पर आसीन होने का क्या लाभ जब प्रवृत्ति ही नीच हो। इस बात को समझते हुए अब हम सबको होश में आना है। आजकल 'द्वारे' से, समाज के नैतिक उत्थान के प्रति सराहनीय कदम उठाये जा रहे हैं। यदि हम उन कार्यक्रमों का हिस्सा नहीं बनते तो हम सबसे बड़े मूर्ख हैं। ऐसी मूर्खता करने से अपना तो जीवन गया ही गया, साथ ही अपनों का भी जीवन गया समझो। सजनों जानो कि उसी सांसारिक रस की वजह से ही कितना बड़ा पाप कमा लिया। जो भी बात यहाँ होती है, अगर वह बात आपको सुनाई देती है तो फिर उसे अन्दर ठहराने में आपको क्या तकलीफ है? उस पर अमल करने के प्रति जो ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता है क्या आप उस उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल हो? खुद पर तरस खाओ, यह अमोलक जीवन मानव चोला कहीं बर्बाद न हो जाये इस हेतु हम अनुरोध करते है कि सुमति में आ जाओ। अब आगे सुनोः-

**(महाबीर जी के मुख के शब्द)**

**चानणा सारे जग ही उत्ते रोशनी पौंदी है कुल ब्रह्माण्डे।**

राम सारे अन्दर रमे, रम रिहा है कुल जहाने।

ओ३म् रम रिहा राम ही राम श्री राम श्री राम।।

दो मूर्तियां इक मूरती दिस्से, दिस्से विच दरबार, रामा दिस्से विच दरबार।

बिन सूरजों प्रकाश आपदा मूर्ति कुल संसार, सियापति रामचन्द्र की जय।।

श्री राम श्री राम ओ३म् रम रिहा राम ही राम श्री राम श्री राम।

(श्री रामचन्द्र जी कह रहे हैं)

आप नू फिकर है क्या जिसदे संग हनुमान रामा जिस दे संग हनुमान।

ओहनूं कोई न पवे अवलड़ी ओहदे आप सहाई राम, सियापति रामचन्द्र की जय।

श्री राम श्री राम ओ३म् रम रिहा राम ही राम श्री राम श्री राम।।

इक रूप इक नाड़ियां इको है सिरताज रामा इको है सिरताज।

कलुकाल हटने मगरूं आप दा होसी राज, सियापति रामचन्द्र की जय।

श्री राम श्री राम ओ३म् रम रिहा राम ही राम श्री राम श्री राम।।

(अब सच्चेपातशाह जी कह रहे हैं)

बातचीत आप ही करसन उत्तर देसन हुन आप, रामा उत्तर देसन हुन आप।

मैं बालक उन्हा दी गोद दा आप हो सिरताज, सियापति रामचन्द्र की जय।

श्री राम श्री राम ओ३म् रम रिहा राम ही राम श्री राम श्री राम।।

(अब रघुनाथ जी कह रहे हैं)

**इक मूर्ति सारे जग वसे, दूसरी वसे न कोय रामा दूसरी वसे न कोय।**

**मूर्ति हर अन्दर प्रकाशदी, रोशनी उसे दी होय, सियापति रामचन्द्र की जय।**

**श्री राम श्री राम ओ३म् रम रिहा राम ही राम श्री राम श्री राम।।**

**शक्ति आप दी सजी भुजा, लक्ष्मी खबी भुजा जान, रामा लक्ष्मी खबी भुजा जान।**

**भक्ति चरण हिन आपदे कोई विरला लवे पछान, सियापति रामचन्द्र की जय।**

**श्री राम श्री राम ओ३म् रम रिहा राम ही राम श्री राम श्री राम।।**

सजनों अवश्य ही यह सुनकर आपके अन्दर दुराचारिता को त्याग सदाचारिता में आने की यानि भाव-स्वभाव परिवर्तन की इच्छा उत्पन्न हुई होगी। इस इच्छा पूर्ति हेतु सजनों शास्त्र-विहित कोई विपरीत बात कदापि न करो। जानो निन्दा-चुगली करने वाले सजन कुमतिवान होते हैं, अतः उनसे दूर ही हट जाना चाहिये। अतः आपको सम्भलना है, समझना है और सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ जो व्यावहारिक रूप दर्शा रहा है, उसी के अनुकूल अपना रहन-सहन, खान-पीन व बातचीत का तरीका अपनाने में ही अपनी शान समझनी है। इसी में ही सबकी भलाई निहित है। मानते हो तो जयकारा लगाओः-

**बोल सजन श्री शहनशाह महाबीर बजरंग बली जी की जय**

**बोल सजन श्री शहनशाह महाबीर बजरंग बली जी की जय**

**बोल सजन श्री शहनशाह महाबीर बजरंग बली जी की जय**

अब जय बोली है तो आगे से ऐसी त्रुटि मत करना। आप सबके लिये बनता है कि कदम-कदम पर विचार पकड़ो और विचारसंगत ही द्वारे की नीतियों का प्रयोग करो। इस प्रकार व्यवहार अपनाकर इन्सानियत में आ जाओ। अब आगे सुनोः

जिस जगह पर श्री साजन जी बैठते थे, बैठे ही थे कि बारी वाली जगह डोलने लगी तो थोड़े दिनों के बाद यह कीर्तन महाबीर जी ने दिया।

**(महाबीर जी के मुख के शब्द)**

**श्री रामचन्द्र जी दी माया, माया ने खेल है रचाया।**

**माया ने खेल है रचाया, माया ने खेल है रचाया।।**

**श्री रामचन्द्र जी दी माया, माया ने खेल है रचाया।**

**माया ए है जे बड़ी प्रवीन साजन जी कर लवो ए यकीन।।**

**हो जाओ रामचन्द्र दे आधीन, महाबीर जी ने ए फरमाया है।**

**ए धुरों सन्देशा आया है, ए धुरों सन्देशा आया है।**

**महाबीर जी ने ए फरमाया है, ए धुरों सन्देशा आया है।**

**हो हो हो हो बिगल बजसी बिगल पुरे दा।।**

**महाबीर जी रहे ने पुकार श्री राम रटो।**

**महाबीर जी रहे ने पुकार श्री राम भजो।।**

**राम रटो श्री राम भजो राम रटो श्री राम भजो।**

**इक श्वास न जावे खाली, श्री राम रटो।।**

श्वास न जावे सजनों, श्वास न जावे ओय।

इक श्वास न जावे खाली, श्री राम रटो।

राम रटो श्री राम भजो, राम रटो श्री राम भजो।।

(श्री रामचन्द्र जी कह रहे हैं)

ए है जे यह मेरी माया, माया ने खेल है रचाया।

सदैव गोदी दे विच राहवो, माया दे वस न आवो।।

ए है जे यह मेरी माया, ए धुरों सन्देशा है आया।

ए धुरों सन्देशा है आया, ए धुरों सन्देशा है आया।

ए है जे यह मेरी माया, माया ने खेल है रचाया।।

कलुकाल ने पाया घेरा, जीवां ने पाप किया बहुतेरा।

जीवां ने पाप किया बहुतेरा आ हिलया है जे सिंहासन मेरा।।

ए है जे यह मेरी माया, ए धुरों सन्देशा है आया।

ए धुरों सन्देशा है आया, ए धुरों सन्देशा है आया।।

ए शक्ति खड़ी जे तैयार, कलुकाल दे करन नू संहार।

ए कौतुक ही ओ देखन गे ओ देखन गे निष्कामी ओ यार।।

ए है जे यह मेरी माया, ए धुरों सन्देशा है आया।

ए धुरों सन्देशा है आया, ए धुरों सन्देशा है आया।।

साडी गोदी दे विच राहवो तुसां जरा ना घबराओ।

कई वारी सृष्टि उपजे बिनसे, घड़ा भन्नण घड़न दा है व्यवहारो।।

ए है जे यह मेरी माया, ए धुरों सन्देशा है आया।

**ए धुरों सन्देशा है आया, ए धुरों सन्देशा है आया।।**

**देखो शक्ति दा हथियार उसने करना है जे शिकार।**

**पापी देसी सारे ओ मार ना बचे रावण जये ओ यार।।**

**ए है जे यह मेरी माया, ए धुरों सन्देशा है आया।**

**ए धुरों सन्देशा है आया, ए धुरों सन्देशा है आया।।**

सजनों कीर्तन के एक-एक शब्द को स्पष्ट रूप से आप तक पहुँचाने का प्रयास किया जाता है अतः उसका आपको लाभ लेना चाहिये। आगे जानो कि पापी कौन होता है? - पापी वह होता है जो कामनायुक्त स्वार्थपर जीवन जीने को ही सुख समझता है, जो कि वास्तव में क्षणिक नाशवान सुख होता है। ऐसा सुख पल-पल अपना रूप बदलता रहता है। इसके विपरीत सजनों पापमुक्त सत्यतापूर्वक जीवन निष्कामी व्यतीत करता है, यही समझने की मुख्य बात है। जब दुराचारी, भ्रष्टाचारी अमानवता का प्रतीक होता है और सदाचारी मानवता का प्रतीक होता है। दुराचारी माया की प्राप्ति की लालसा यानि माया से ठगा जाता है। इस प्रकार माया जब उसके मन को ठग लेती है तो उसका मन बहिर्मुखी हो जाता है, जगत में उलझ जाता है। जब मन अन्तर्मुखी ही नहीं है तो सुरत/ख़्याल कंचन कैसे रह सकता है? वह निःसन्देह दोषपूर्ण ही रहेगा। जब ख़्याल दोषपूर्ण है तो आप मानसिक रूप से अस्थिर हो परिस्थितियो के गुलाम बन जाओगे। स्वतन्त्रता और मानवीय शान से जीवन जीना नामुमकिन हो जायेगा। बाहरी शान अपने आप में उलझा लेगी। सजनों यह उलझन बैहरुनी वृत्ति में इस तरह फँसा देगी कि आपके लिये नाम-अक्षर चलाकर अफुर अवस्था में आना दुर्लभ सी बात हो जायेगी।

सजनों आजकल ऐसा ही हुआ पड़ा है क्योंकि मानसिक तौर पर आज हर मानव के सिर पर माया हावी है। माया के लिये आज का इन्सान कोई भी नीच से नीच कर्म करने के लिये तैयार है। याद रखो जब तक इस गम्भीर परिस्थिति से ऊपर नहीं उठते, तब तक आप मायावत जीव कहलाओगे, आप स्वतन्त्र हो ही नहीं सकते। सजनों जानो कि मायातीत

ही स्वतन्त्र होकर एकरूप अर्थात परमात्म स्वरूप का अनुभव कर सकता है। पर हकीकत तो यह है कि माया डँगनी ने तो आपके रोम-रोम, रग-रग को इस तरह से डस लिया है कि उसके विष ने आपको तीनों तापों से ग्रस्त कर रखा है। उसके प्रभाव से न तो आप आध्यात्मिक तौर पर स्वस्थ हो और न ही बौद्धिक तौर पर। यह अस्वस्थता आपकी विवेक-शक्ति को हर चुकी है अतः सत्य-झूठ की पहचान ही नहीं रही। आपको ज्ञात ही नहीं है कि जीवन का सत्य मार्ग क्या है और झूठ का रास्ता कौन सा है? सजनों जब तक दोनों का अन्तर ही समझ नहीं आता, लाभ-हानि ही नहीं समझ आती, तब तक चिर सुख और आनन्द का मार्ग, जिसे कि परमार्थ कहते हैं, कैसे प्राप्त कर सकते हो? यही कारण है कि हमारा बार-बार किया हुआ प्रयत्न हारता है क्योंकि हम स्वार्थ से उठ परमार्थ बनने के प्रति अपना आत्म-विश्वास ही खो चुके हैं। अब हमारे साथ जो नकारात्मक हुआ सो तो हुआ पर भावी सन्तानों के साथ विश्व-स्तर पर ऐसा न हो, उनको परमार्थ के मार्ग पर प्रवृत होने के प्रति आध्यत्मिक वाक्पटुता का कार्यक्रम हुआ था, जो कि काफी सफल रहा था। सारे दर्शक उन बच्चों को सुनकर दँग रह गए कि कलियुग में बच्चे ऐसा भी बोल सकते हैं। उस कार्यक्रम से समझ आया था कि बड़े तो कलियुगी भाव-स्वभाव में परिपक्व हो चुके है, अतः अच्छा तो यही रहेगा कि  उनके स्थान पर बाल्यावस्था में जो मानव रूप में हैं, वहीं से ही उनका भाव-स्वभाव सकारात्मक बनाने का प्रयास आरम्भ करें। सजनों आज के माता-पिता, आज के स्कूल-कॉलेज ऐसा सब कुछ नहीं कर पाये। सबको आध्यात्मिक ज्ञान से परिचित कराने में भी कमजोर पड़ उन्हें भौतिकवाद में ही उलझा दिया। अतः अब आध्यात्मिक वाक्पटुता के बाद, उसकी सफलता को दृष्टिगत रखते हुए आज आगे का कार्यक्रम घोषित किया जा रहा है। आप लाभान्वित होवो या न होवो, यह आपकी व्यक्तिगत इच्छा पर निर्भर करता है परन्तु पूरी सृष्टि को तो आपकी इच्छा के साथ नहीं रख सकते। मौका तो सबको मिलना है अतः आपको भी लाभ उठाना चाहिये।

इस परिप्रेक्ष्य में जानो कि इस आने वाली प्रतियोगिता में द्वितीय श्रेणी के विद्यार्थियों से लेकर बारहवीं तक के बच्चों को सम्मिलित किया जायेगा ताकि परिवारजनों के हाथ से निकल विद्यालय पहुँचते ही परमार्थी ज्ञान के प्रति उनका मानसिक रुझान पनपे। सजनों जब यह प्रयास भी सफल रहा तो उसके पश्चात तीसरा प्रयास किया जायेगा। इसीलिये आप सबको सूचित कर रहे हैं कि आप चाहे युवा, चाहे प्रौढ़, चाहे वृद्धावस्था को प्राप्त हो, आपको भी अपने जीवन-लक्ष्य प्राप्त करने के प्रति सुचेत हो स्वयं को समझाना चाहिये।

इसमें आपको मानसिक रूप से प्रवृत्त होना चाहिये ताकि स्वार्थपरता का त्यागकर कामयुक्तता से मुक्ति पा अध्यात्म अपना लो। परमार्थ बनने के लिये आपके मन-वचन-कर्म से अध्यात्म प्रदर्शित हो। इस प्रकार अध्यात्म को अपना लो ताकि देखने वाले आपका पुरुषार्थ व आत्म-नियन्त्रण देखकर दँग रह जायें कि अगर यह इस अवस्था में आत्मसुधार कर सकता है तो मैं बाल्यावस्था में क्यों नहीं कर सकता? ऐसा करके अपने बच्चों के, परिवारजनों के व समाज के सामने एक नेक इन्सान बनने का आदर्श स्थापित करो। तदुपरान्त जीवन का सुख और आनन्द भोगो तो आपका मन सदा तृप्त रहेगा, कभी अशान्त नहीं होगा। मनकी अशान्ति मस्तिष्क को अस्थिर करती है। सजनों जब मन शान्त होता है तो आप मानसिक रूप से मजबूत होते हो, विवेकशील होते हो, सत्य-झूठ, अच्छाई-बुराई को पहचानने वाले होते हो। तब जीवन का हर कदम उस पहचान यानि निर्णय अनुसार ही आगे बढ़ाने वाले होते हो, तो आपका जीवन निष्पाप-जीवन हुआ। सजनों यही रामचन्द्र जी ने, कृष्ण जी ने और यही आदर्श दसपातशाह जी ने स्थापित किया। वह मायारूपी धन यानि तन-मन-धन भी कुर्बान करने से नहीं सकुचाये। उन्होंने कितनी भयंकर यातनाएँ सहन की पर यातनाओं से भी कमजोर होकर कामनायुक्त नहीं बने अपितु निष्काम अवस्था में समरस्ता से सधे रहे। जानो निष्कामी ही ब्रह्म की अनुभूति कर सकता है। कामनायुक्त कोई भी इन्सान ब्रह्म की अनुभूति नहीं कर सकता कि मैं और कुछ भी नहीं ब्रह्म ही हूँ। इस औचित्य को समझो और बर्बादी का मार्ग त्यागकर अपना जीवन आबाद कर लो।

अब ध्यान से सुनो कि आगामी कार्यक्रम सबका सांझा है। इसको अधिक से अधिक बाल्यावस्था के सजनों तक पहुँचाना हमारा परम कर्त्तव्य है। अतः आप, हम सबके लिये बनता है कि जहाँ हमारे बच्चे या हमारे नाती-पोते जिस-जिस स्कूल में भी विद्या ग्रहण कर रहे हैं, उस हर स्कूल में आपने जाकर इस प्रोग्राम को कराना सुनिश्चित करना है। इसमें कोई भी कमजोरी दिखाकर कामचोर नहीं बनेगा क्योंकि यह समाज सुधार का काम है और अपनो को एक ऐसा अवसर प्रदान करने की बात है कि वह स्वार्थ से परमार्थ बनने के प्रति तत्पर हो जायें। आपके प्रयास द्वारा उनके अन्दर प्रबल इच्छा उत्पन्न हो, ऐसी इच्छा कि वह आपको भी मार्गदर्शन करने में सक्षम हो जायें। जो काम आप इतने वर्षों में नहीं कर पाये, आपकी प्रौढ़/वृद्धावस्था आ गई, शायद उन अपने परिवारजनों के बच्चों के कहने से अक्ल टिकाणे आ जाये और जीवन का लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करने में आप सफल हो जाओ। यह किसी का निजी कार्यक्रम नहीं है अपितु विश्व-स्तर पर सर्वहित की बात है। सजनों इस

बात को मानो कि जो भी इस कार्यक्रम को कराने में सफल रहेगा, उसके अन्दर भी नकारात्मक से सकारात्मक भाव-स्वभाव परिवर्तन की जागृति आयेगी। सजनों दूसरों के साथ-साथ इसमें हमारा अपना भी भला निहित है। इस सन्दर्भ में जानो कि परोपकार के कार्य में तन-मन-धन वारने से जो सकुचाता है, वह मूर्ख और अज्ञानी कहलाता है। आपको यह न सुनना पड़े अतः जहाँ कहीं भी आपका निजी सम्पर्क है, वहाँ जाकर अपनी शक्ति का पूरा इस्तेमाल करना है। फिर एक दिन यहाँ पर आकर आपको बताना पड़ेगा कि आपके माध्यम से व्यक्तिगत रूप से कितने स्कूलों में यह प्रोग्राम हुआ। यदि आपका उत्तर सकारात्मक हुआ तो आप वाकई ही इस द्वारे के निष्काम सेवक हैं वर्ना तो आप मतलब परस्त हैं, केवल मतलब साधने के लिये ही यहाँ आते हो। अतः अपने आपको निष्कामी सेवक प्रमाणित करने हेतु इतना तो आपको करना ही पड़ेगा।

अब बोलोः-

**सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की विजय, विजय, विजय**

**सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की विजय, विजय, विजय**

**सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की विजय, विजय, विजय**

सजनों जब आपके बच्चे परिवारों में परमार्थ की चर्चा करनी आरम्भ कर देंगे तो आपके लिये भी परमार्थ में रुचि रखना आसान हो जायेगा। आपको स्पष्ट सन्देश मिलेगा कि यदि यह बच्चे ऐसा कर सकते हैं तो मैं क्यों नहीं? सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि 'जाये सिखैन्दे आये'। जो परमार्थी ज्ञान आप उन्हें नहीं दे पाये, वह अब आपको देने वाले हैं। इस क्रिया से वह उद्देश्य भी हल होने वाला है। हारना मत, कमज़ोर मत पड़ना।

आप अपने उद्देश्य में कामयाब हों, इन्हीं शुभ कामनाओं सहित।

अगले इतवार को कार्तिक की मीटिंग है। मीटिंग में नीति अनुसार सबने पहुँचना है। अगले इतवार को अपने अपने शहरों में हर सजन ने मीटिंग में जरूर पहुँचना है। यह नीति अनिवार्य है।